Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

समकालीन हिंदी साहित्य और सिनेमा

श्रीमती कल्पना पांडेय शुक्ला*

* सहायक प्राध्यापक (हिंदी) स्वामी आत्मानंद गवर्नमेंट इंग्लिश मिडियम मॉडल कालेज, धनोरा, दुर्ग, हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) भारत

प्रस्तावना – साहित्य और सिनेमा हमेशा से एक दूसरे के पूरक रहे हैं। जहां सिनेमा जन चेतना में अपना स्थान बनाने में सक्षम है उसकी लोकप्रियता निरंतर बनी रहती है वह समाज में परिवर्तन लाने का मुख्य साधन है वह तब संभव है जब उसकी कथावस्तु प्रभावशाली रहे और जन मानस को प्रभावित कर सके हिंदी साहित्य ने सिनेमा को प्रसिद्धि दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। जब भी ऐसा लगा कि सिनेमा का अस्तित्व खतरे में है उसने हमेशा हिंदी साहित्य की ओर उम्मीद से देखा है।

अर्थ की दृष्टि से देखें तो जो काल के समान या समानांतर चले वही समकालीन है। एक शब्द में वर्तमान काल भी कह सकते हैं। समकालीन साहित्य वह है जो वर्तमान में साहित्य रचा जा रहा है सामान्यत: यह काल स्वतंत्रता के बाद के साहित्य से लेकर आज तक का साहित्य कहा जा सकता है पर वास्तविक तौर पर देखें तो पूर्व में लिखे गए साहित्य भी चाहे वह काव्य हो कहानी या उपन्यास सारी विधाओं पर नजर डालें तो यह दृष्टिगोचर होता है कि उनके द्वारा लिखे साहित्य के विषय आज भी संदर्भित है साहित्यकार का चिंतन वही है बस परिवेश में थोड़े बहुत बदलाव आ गए हैं पर मूलत: उसका आधार वर्तमान में भी बना हुआ है ।इसलिए समकालीन साहित्य को हम किसी विशेष समय में नहीं बांध सकते ।कहा जाता है साहित्य समाज का दर्पण होता है, जैसा सीधा प्रत्यक्ष संबंध साहित्य का होता है वैसे ही सिनेमा का भी होता है क्योंकि दोनों ही मानव संवेदनाओं को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है जिसमें पाठक दर्शन श्रोता अपना एक अंतर्संबंध स्थापित करते हैं दोनों ने समाज को उसका आईना दिखाते हुए एक नई दिशा प्रदान करने करने में अहम भूमिका निभाई है। कहानी उपन्यास आदि को पढ़ते समय पाठक जो पात्रों ,वातावरण का काल्पनिक चित्रण मन में निरूपित करता है सिनेमा उसी को वास्तविक रुप में प्रदर्शित कर पाठक को दर्शक बनाकर उसकी कल्पना को साकार करता है और व्यक्ति अंतर्भूत होकर भाव विभोर हो जाता है एवं पात्रों से अपना तारतम्य स्थापित करता है यहीं साहित्य और सिनेमा पूर्णता को प्राप्त करते हैं ।

चूंकि साहित्य प्रेमी विरले होते हैं लेकिन सिनेमा का दर्शक विस्तृत है एक अनपढ़ मजदूर भी सिनेमा देखता है और बुद्धिजीवी वर्ग भी और इस प्रकार एक साहित्यकार से समूचा जन परिचित होता है । बाबू गुलाब राय के अनुसार 'साहित्य संसार के प्रति हमारी मानसिक प्रतिक्रिया है अर्थात विचारों भाव और संकल्पों की शाब्दिक अभिव्यक्ति है और वह हमारे किसी न किसी प्रकार के हित का साधन बनने के कारण संरक्षणीय है' देखा जाए तो सिनेमा एक वैज्ञानिक आविष्कार है जो जनता जनता को पहन के माध्यम से शिक्षा संस्कार और मनोरंजन देने का माध्यम है वह अच्छा विषय को भी सहज रूप से प्रस्तुत करता है।

हमारे देश में प्राचीन काल से ही रामायण महाभारत और पुराणों का कथा वाचन नाट्य निरूपण प्रस्तुत कर देश की ज्ञान संस्कृति ऐतिहासिक परंपरा को जन जन तक पहुंचाने का कार्य किया जाता था यह एक प्रकार से आनंद प्राप्ति का साधन भी था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसारख प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित वृत्ति में संचित प्रतिबिंब होता है,सिनेमा को समाज का सबसे जीवंत प्रतिबिंब माना जाता है सिनेमा की सौ बरस के संपादक मृत्युंजय ने अपने संपादकीय आलेख में लिखा है किसी ने मन बहुत आसानी से हमारे जीवन का हिस्सा बन गया।

प्रारंभिक सिनेमा और समाज– प्रारंभ में सिनेमा की मुख्य कथा पौराणिक धार्मिक विषय पर आधारित थी इसके पहले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जनचेतना केलिए अपने नाटकों के मंचन को माध्यम बनाया। हिंदी सिनेमा का आरंभ1913 में दादा साहब फाल्के की राजा हरिश्चंद्र से हुआ जो मूक फिल्म थी।1931में अलाम आरा पहली बोलती फिल्म बनी। जब राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण का काल बल ले रहा था तब सिनेमा अपनी जड़ें बना रहा था और और धीरे–धीरे साहित्यकारों का रुझान सिनेमा द्वारा अपनी रचनाओं को जनता के समक्ष प्रस्तुत करने की तरफ हुआ जो उन्हेआर्थिक सामाजिक दोनों दृष्टि से हित चिंतक लगा किंतु प्रारंभ में हिंदी साहित्यकारों को अपने साहित्य के साथ सिनेमा द्वारा किसी भी प्रकार का समझौता मंजूर नहीं था इसलिए शुरुआती दौर में प्रेमचंद अपनी कहानी उपन्यास पर बनी फिल्मों से संतुष्ट नहीं थे। उनकी कहानी पर बनी मिल मजदूर नामक फिल्म के प्रदर्शन के बाद उन्होंने कहा यमैं इसमें जरा भी नहीं हूं सब कुछ निर्देशक है।

साहित्य पर आधारित फिल्में– प्रेमचंद का साहित्य,भारतीय सिनेमा पर भी उतना ही यथार्थ रचता है जितना अपनी लेखनी में। उनकी मिल मजदूर, शतरंज के खिलाड़ी,सद्गति,सेवा सदन,गबन, गोदान उल्लेखनीय है। फणीश्वर नाथ रेणु की मैंला आंचल, संवदिया, तीसरी कसमख्मारे गए गुलफाम।शरद चंद्रचटोपाध्याय की देवदास,परिणीता,स्वामी। सलिल चौधरी की दो बीघा जमीन, राजेंद्र यादव की सारा आकाश, मनु भंडारी की छोटी सी बात,(इतनी सी बात) रजनी गंधा,(यही सच है)। धर्मवीर भारती का सूरज का सातवां घोड़ा ,शिव मूर्ति की कसाई बाड़ा ,तिरियाचरितर, तर्पण ।कमलेश्वर की काली आंधी, बदनाम बस्ती एक सड़क संतावन गलियां।गुलशन नंदा के पत्थर के ओठ पर बनी खिलौना, पत्थर के सनम ,कटी पतंग ,दाग झील के उस पार महबूबा ।

चेतन भगत की 3 इडियट , 2 स्टेटस ,काई पो चे। शेक्सपियर के नाटकों पर बनी हिंदी फिल्में मकबूल ओमकारा, हैदर । प्रसिद्ध निर्देशक मृणाल सेनने भुवन सोम बलाईचंद मुखोपाध्याय के उपन्यास पर,खंडहर प्रेममित्र की कहानी पर आधारित थी।

वर्तमान में ओटीटी प्लेटफॉर्म पर हिंदी साहित्यकारों की रचनाओं जिसमें कहानी उपन्यास जीवनीशामिल है पर कई फिल्में बन रही है कुछ वेब सीरीज जिसमें दिव्य प्रकाश दुबे की मुसाफिर कैफे ताजा उदाहरण है

समकालीन साहित्य सिनेमा और समाज का संबंध– साहित्य वो होता है जिसमें सबका हित हो जो दिखता है वही लिखा जता है अगर यह सत्य माने तो तो प्रत्येक काल का साहित्य समाज का वह आइना होता है जो समाज को उसकी अंत: स्थिति से परिचित कराता है।

मीरा जल छत्रि की पुस्तक साहित्य सिनेमा का अंतर संबंध में सिनेमा के सौंदर्य को रेखांकित करते हुए बताया है कि सिनेमा का एक तकनीकी पक्ष है और दूसरा सामाजिक यदि तकनीकी सिनेमा का जिस्म है तो समाज उसमें प्राण सूखने की क्षमता रखता है। समाज की जलन समस्या प्रवृत्तियों को साहित्य और सिनेमा विमर्श अपने संबंधों द्वारा रूपांतरण करना चुनौती भरा कार्य होता है।

प्रेमचंद की कहानी शतरंज के खिलाड़ी पर सत्यजीत रे द्वारा निर्देशित तत्कालीन राजाओं की विलासीता अव्यवस्थित प्रजातंत्र अयोग्य शासक राज्य और प्रजा के पतन का कारण होते हैं इसका मूल संदेश था ।

दो बीघा जमीन सलील चौधरी के उपन्यास पर थी सदगति जाति व्यवस्था पर कुठाराघात करती है इसी प्रकार गबन स्त्री की महत्वकनक्षा कर्ज न त्रासदी गोदान भारतीय किसान मार्मिक चित्रण साथ ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था और नगर की यह यथार्थता को उसी रूप में प्रस्तुत किया गया है ।फणीश्वरनाथ रेणु का मैला आंचल ,डाक्दर बाबू ग्रामीण अंचल की गरीबी साधन विहिन गांव की समस्या प्रदर्शित करती है इन्हीं की मारे गए गुलफाम उपन्यास पर बनी फिल्म तीसरी कसम स्त्री विमर्श, ग्रामीण परवेश होने के बावजूद निस्वार्थ प्रेम की व्याख्या करती है शरद चंद उपाध्याय के उपन्यास देवदास ,परिणिता पर अलग–अलग समय पर फिल्म बनी और और हर बार यह फिल्म सफल रही।शरदचंद चटोपाध्याय स्त्री के प्रेम अंतर्द्वंद्व और मन की गहराई के रचयिता थे। मोहन राकेश कीआषाढ का एक दिन नाटक प्रगति एवं प्रयोगवाद से जन्मे आधुनिक मापदंड का उदाहरण प्रस्तुत करती है ।धर्मवीर भारती का सूरज का सातवां घोड़ा श्याम बेनेज्ञगल द्वारा निर्देशित फिल्म में स्त्री अपनी रूढ़िवादी छवी से भिन्न प्रस्तुत की गई है राजेंद्र यादव रचित सारा आकाश बेरोजगारी ,स्त्री पुरुष के बदलते सम्बन्ध, शहरी घुटन पर बनी।

इसी क्रम में प्रासिद्ध उन्यासकर गुलशन नंदा के उपन्यासों पर भी कई फिल्में बनी जैसे खिलौना, झील के उस पार, कटीपतंग दाग, मेहबूबा स्त्री पुरुष प्रेम, समाज की भूमिका मुख्य केंद्र रहा।भगवती चरण वर्मा के उपन्यास चित्रलेखा पर आधारित फिल्म ऐतिहासिक क्लासिक कहीं जा सकती है। इसी क्रम में आचार्य चतुरसेन के उपन्यास वैशाली की नगरवधू पर आम्रपाली एक क्लासिक फिल्म थी जो अपने समय के इतिहास का सजीव चितरण करती है यह फिल्म 39 ऑस्कर अवॉर्ड में बेस्ट फॉरेन लैंग्वेज कैटिगरी में प्राविष्ट हुई थी।

दो बीघा जमीन सलिल चौधरी के उपन्यास पर थी जिसमें कृषक जीवन के यथार्थ ,कर्ज ,पलायन त्रासदी को चित्रित किया गया है ।अर्ध सत्य का स्क्रीन प्ले साहित्यकर विजय तेंदुलकर के द्वारा लिखा गया जिसके लेखक श्री पनवेल कर थे जो भारतीय पुलिस सिस्टम के सामाजिक नैतिक परिदृश्य को समाज के सामने लाती है। अमोल पालेकर के द्वारा निर्देशित पहेली राजस्थान के महान कथाकर विजयदान देथा की कहानी दूविधा पर आधारित है जो लोक कथाओं के माध्यम से स्त्री के अस्तित्व पर प्रश्न करती है।

समकालीन हिंदी साहित्यकरों में कमलेशवर के साहित्य ने भी हिंदी सिनेमा को समृद्ध किया इनके द्वारा लिखित का कालीआंधी(आंधी)नाम से प्रदर्शित की गई तत्कालीन प्रधानमंत्री के व्यक्तित्व से प्रेरित मानी जाती है। यह उस समय के राजनीतिक और उसके पतन को दर्शाती है।

इन्हीं के उपन्यास एक सड़क 57 गलियां पर बादनाम बस्ती नामक फिल्म बनी जो महानगर के यांत्रिक जीवन बेरोजगारी असुरक्षा का यथार्थ चित्रण है इसी क्रम में प्रासिद्ध उपन्यासकर गुलशन नंदा के अपन्यासओं पर भी कई फिल्मएं बनी जैसे दाग कती पतंग झील के उस पार माहबुबा अधिकतर नायिका प्रधान फिल्म में रही जिसे पारिवारिक फिल्म का दर्जा दिया जा सकता है। यह दुर्भाग्य की बात रही कि गुलशन नंदा जैसे लोकप्रिय एवं सफल साहित्यकार को हिंदी साहित्य में वह स्थान नहीं मिला जो मिलना चाहिए था उनके उपन्यासों से बनी फिल्में अत्यंत सफल रही।

चेतन भगत की 3 ईडियट युवाओं केमानसिक द्वंद्व शिक्षा व्यवस्था को एक नया आयाम देती है। टू स्टेट अंतरजातीय विवाह और पारिवारिक मतभेद को प्रदर्शित करती है ककाई पो चे दोस्तों के रिश्ते और आपसी प्रेम की कहानी है। उपन्यासकार शिव मूर्ति की कसाई बाढ़ा ,तिरिया चरित्तार समाज में दलित स्त्री की स्थिति पुरुषों की प्रधानता और मौजूदा् समाज को सामने लाती है।

बदलते तकनीकी दौर में ओटीटी प्लेटफॉर्म समकालीन साहित्य की वीभिन्न विधाओं से कथा वास्तु ली जा रही है जिसमें लीला प्रयाग अखता की किताब पर आधारित है जो बताती है की आने वाला समय भय से ग्रसित हो सकता है। सेकंड गेम्स विक्रम चंद्रा लेखक है इसी प्रकार स्टेट आफ सीन26/11 आतंकी हमलों में लोगों के साहस की कहानी दिखाती है। मुसाफिर कैफे के दिव्य प्रकाश दुबे अपने दौर के युवक युवती के आधुनिक प्रयोगिक सोच को सामने लाते हैं जिसमें आपसी रिश्तों पर शादी की मोहर नहीं वरण विश्वास और प्रेम को महत्व दिया गया है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की अपनी मंजिल और अपने सपने होते हैं यह उपन्यास बदलते सामाजिक पर परिदृश्य का संकेत है।

इस प्रकार देखेंतो वर्तमान समाज में अनेक विमर्श इसे खोखला किया जा रहे हैं इन सभी विमर्शों पर(स्त्री विमर्श ,दलित विमर्श, किसान विमर्श वृद्ध विमर्श) हिंदी समकालीन साहित्य अपना स्वर मुखर किए हुए हैं।

दूरदर्शन पर साहित्य का प्रभाव – केवल सिनेमा ही नहीं दूरदर्शन पर भी कई साहित्यकारों की कृतियां धारावाहिक के रूप में प्रस्तुत की गई जिसमें प्रेमचंद अमृता प्रीतम मन्नू भंडारी मृणाल पांडे की कहानी प्रमुख है– तहरीर धारावाहिक प्रेमचंद केविभिन्न साहित्य कृतियों परबना था ।जैसे –निर्मला कम उम्र में विवाह एक स्त्री की सारी महत्वाकांक्षाओं के दमन का कारण होता है धारावाहिक में यह समस्या अत्यंत भावनात्मक रूप से दिखाई गई।

मनोहर श्याम जोशी द्वारा रचित धारावाहिक हम लोग, बुनियाद, मुंगेरीलाल के हसीन सपने और कक्काजी कहिन सफल धारावाहिक कहा जा कहा जाता है हम लोग और बुनियाद दूरदर्शन के प्रारंभिक धारावाहिक थे इसकी कहानी आम जनता के जीवन से जुड़ी थी इसलिए जनता काभरपूर

प्यार इस धारावाहिक को मिला ।कक्काजी कहिन हास्य व्यंग्य से पूर्ण था। 55 खंबे लाल दीवारें उषा प्रियवंदा द्धारा लिखे उपन्यास पर आधारित धारावाहिक था जिसे स्त्री विमर्श के अंतर्गत रखा जा सकता है ।

इसी प्रकार रांगेय राघव के उपन्यास- कब तक पुकारूं धारावाहिक दलित वर्ग के जीवन,खनट समुदाय, उन पर होने वाले अत्याचार स्त्रियों का शोषण को संवेदात्मक रूप से दिखाया गया है।

उपन्यासकार वृंदा लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास पर इसी नाम से धारावाहिक बना ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बनाया धारावाहिक अत्यंत सफल रहा ।

धारावाहिक चाणक्य- आचार्य चाणक्य जीवन पर बना ऐतिहासिक धारावाहिक था।

तमस – भीष्म साहनी के उपन्यास पर आधारित यह धारावाहिक विभाजन की पीड़ा, त्रासदीको दर्द कोव्यक्त करता है ।

यही नहीं कई बांग्ला साहित्यकारों के उपन्यास और कहानी पर भी दूरदर्शन ने धारावाहिक बनाएं जैसे – गण देवता- तारा शंकर बंधोपाध्याय के उपन्यास पर आधारित था जिसमें बंगाल की गरीबी , अशिक्षा,ग्रामीण स्थिति को दर्शाया गया था ।

श्रीकांत – शरद चंद चट्टोपाध्याय द्धारा रचित उपन्यास पर आधारित था यही नहीं ब्योमकेश बक्शी एक जासूसी धारावाहिक भी दूरदर्शन पर दिखाया गया जो शरदिंदु बंदोपाध्याय द्धारा रचित था।

छोटा पर्दा और बड़ा पर्दा दोनों में ही समकालीन हिंदी साहित्य अपनी पूर्णता के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराता रहा हैऔर समाज को एक सूत्र में बांधने का अपनी संस्कृति, परंपरा सामाजिक उतार-चढ़ाव को जनजन तक पहुंचाने का कार्य किया है।

समकालीन हिंदी साहित्य कारो ख्गीत कारो का सिनेमा में योगदान- हमारे वेदों में तीसरा वेद सामवेद है साम का अर्थ संगीत होता है यह संगीत और मंत्रों का वेद है। यह भारतीय शास्त्रीय संगीत का मूल आधार माना जाता है स्पष्ट है संगीत हमारे जीवन का आधार रहा है जो जीवन को रसविभोर कर हमारे अंतर्मन मन को झंकृत करता है हिंदी सिनेमा के उदय काल में फिल्मों में गीत कहानी का सूत्रधार हुआ करते थे यह परंपरा निरंतर गतिशील है हिंदी गीतकारों ने सिनेमा के लोकप्रियता में प्रभावी भूमिका निभाई है अनेक फिल्में अपने गीतों के कारण ही दर्शकों से प्रेम प्राप्त किया है ।

गीतों में केवल तुकबंदी हीनहीं भाव, रस ,दर्शन का सुंदर समावेश होता है। सरल सहज भाव को व्यक्त करने का माध्यम हमेशा हिंदी काव्य रहे हैं। इसी कारण गीत किसी काल के बंधन में नहीं बंधते ।कुछ पुराने गीत आज भी श्रोताओं की पसंद बने हुए हैं। हिंदी गीतकारो में-

शैलेंद्र-सजन रे झूठ मत बोलो खुदा के पास जाना है ऐसे अनेक गीत शैलेंद्र सिनेमा को दिए हैंजिसमें मानवता नैतिकता प्रेम का संदेश मिलता है किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार ऐसा संदेश परक गीत वर्तमान में भी लोगों की जुबान पर स्थापित है

साहिर लुधियानवी- विद्रोह के कवि शायर इनके गीतों में दर्शन ,माननीय संवेदना सामाजिक यथार्थ के स्वर में मिलते हैं

यह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है ,

लिखने वाले साहिर लुधियानवी – मन रे तू काहे ना धीर धरे, तोरा मन दर्पण कहलाए और जैसे गीत भी लिखे हैं।

कवि प्रदीप-राष्ट्रभक्ति प्रेम के रचयिता कवि प्रदीप हिंदी सिनेमा को कभी ना भूलने वाले वह गीत दिए हैं जो आज स्वतंत्रता के 80 साल बाद भी हमारे मन के करीब है

ऐ मेरे वतन के लोगों गीत को, कौन भूल सकता है

देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान कितना बदल गया इंसान

चल अकेला चल अकेला तेरा मेला पीछे छूट रा

ही जैसे दार्शनिक गीत कवि प्रदीप की कलम से तराशे गए हैं

पंडित नरेंद्र शर्मा- इनके गीतों में साहित्यिक गरिमा भारतीय संस्कृति और भावना का समन्वय विलक्षण है

ज्योति कलश छलके

मैया को खेवईया ने किया हमरे हवाले

गोपाल दास नीरज – हिंदी साहित्य के मूर्धन्य गीतकार,,गजल गायक नीरज जी के गीतों ने हिंदी सिनेमा को सौंदर्य से भरे अर्थगत गीत दिए हैं वही सामाजिक व्यवस्था पर चोट इनके गीतों की विशेषता रही है

रंगीला रे,

मेघा छाए आधी रात,

फूलों के रंग से दिल की कलम से, चूड़ी नहीं मेरा दिल है, करवा गुजर गया गुबार देखते रहे, 7 भरत व्यास – यह कौन चित्रकार है , में दर्शन और रहस्यवाद की झलक, ज्योत से ज्योत जलाते चलो, एकता और मनोबल का संदेश देता गीत है ।

गुलजार- समकालीन गीतों की सूची में गुलजार का नाम आज भी गुलजार है ।

एक मोड़ से आते हैं कुछ सुस्त कदम रस्ते

नाम गुम जाएगा

तुझसे नाराज नहीं जिंदगी, वह शाम कुछ अजीब थी, जैसे जीवन दर्शन से भरे अनेक गीत गुलजार ने सिनेमा को दिए हैं वहीं कजरारे कजरारे एवं बीड़ी जलाई ले जैसे साधारण जनता की पसंद के भी गीत उनकी रचना में मिलते हैं ।

हिंदी सिनेमा में हसन कमाल फिल्म निकाह ऐतबार ,कमर जलालाबादी ने भी फिल्मी गीतों में अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

स्वानंद किरकरे द्धारा लिखा

पीपली लाइव फिल्म का गाना सखी सैंया तो खूब कमात है महंगाई डायन खाए जात है

गाना महंगाई और गरीबी पर तीखा व्यंग है ।

इस प्रकार हिंदी साहित्य के गीतकारों ने सिनेमा में प्रभावकारी भूमिका निभाई है उनके गीतों ने सिनेमा को प्रसिद्ध तो दिलाई साथ ही समाज को एक नई दिशा देने का उनका उद्देश्य भी पूर्ण हुआ।

हिंदी काव्यशास्त्र, समकालीन हिंदी साहित्य और सिनेमा का परस्पर संबंध- आचार्य भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र की रचना की जिसमें रस सिद्धांत का विवेचन मिलता है आचार्य भामाह ने काव्य अलंकार लिखा आचार्य दंडी ने काव्यादर्श में शैली गुणधर्म प्रबल दिया वामन ने रीति सिद्धांत आनंद वर्धन ने ध्वनि सिद्धांत का प्रतिपादन किया और इसे काव्य की आत्मा माना। आचार्य विश्वनाथ ने वाक्यम रसात्मक काव्यम लिखकर विवेचन किया।

केशवदास, मतिराम जैसे रीतिकाल के कवियों ने हिंदी काव्यशास्त्र की परंपरा रखी आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेई ने हिंदी काव्यशास्त्र को समृद्ध किया।

विभाव अनुभाव संचारी भाव के सहयोग से रस की निष्पत्ति होती है साधारण शब्दों में पाठक दर्शन श्रोता को देखने सुनने पढ़ते समय जो आनंद की प्राप्ति होती है वही रस है।

हिंदी सिनेमा का मूल उद्देश्य भी आनंद ही है ।वही हिंदी साहित्य में रचित साहित्य जब दृश्य श्रव्य के माध्यम से सिनेमा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है तो विभाव अनुभाव संचारी भाव स्थाई भाव के साथ रस की प्राप्ति करते हैं।

साहित्य की कोई भी विधा जैसे काव्य कहानी उपन्यास जीवनी, पढ़ता या सुनता है तो उससे अपना जुड़ाव महसूस करता है पर वही जब सिनेमाई परदे पर अभिनेता या अभिनेत्री या कोई भी अन्य पात्र उसके सामने साक्षात रूप में उपस्थित होते हैं तो उनसे जुड़ता ही नहीं स्वयं पात्र में अपने आप को पाता है। फिल्मों में दृश्य वातावरण संगीत पात्रों का अभिनय पार्श्व ध्वनि सब मिलकर संयुक्त रूप से एक ऐसा संसार रचते हैं कि दर्शक कुछ घंटे के लिए उस संसार में जीवन जीता है ।सिनेमा देखते समय दर्शक हिंदी काव्यशास्त्र के सभी अंगों से एकाकार हो जाता है और यहीं आनन्द की उत्पत्ति होती है। अभिनीत पात्रों के साथ वह हंसता है रोता है क्रोध करता है। नायक नायिका के साथ संयोग और वियोग अनुभव करता है। खलनायक को देख उसमें जो जुगुप्सा का संचार होता हैक्योंकि यहां पर दृश्य विभाव अभिनय अनुभाव वातावरण संचारी भाव और अंदर के स्थाई भाव के सहयोग से रस उत्पन्न होता है।

साहित्यकार द्वारा रचा गया संवाद और गीत अपनी सभी शब्द शक्तियों, अलंकारों से परिपूर्ण हो इस आनंद को दुगना कर देते हैं और यही हिंदी काव्यशास्त्र साहित्य और सिनेमा का पर इस पर संबंध दृष्टिगोचर होता है। विशेषत: कलात्मक फिल्मों में हिंदी काव्य शास्त्र का पूर्णत: प्रयोग होता है।

समकालीन हिंदी साहित्य और सिनेमा के अंतर संबंध में एक दुखद पहलूयह रहा कि साहित्यकार को सिनेमा वह सम्मान और प्रसिद्धि नहीं देता जिसका वह अधिकारी होता है उदाहरण के तौर पर मुंशी प्रेमचंद जी ने स्वयं यह बात स्वीकारी उन्होंने लिखा ययह एक बिल्कुल नई दुनिया है साहित्य से इसका बहुत कम सरोकार है –आदर्शवाद महंगी चीज है अधिकांश लेखकों को सिनेमा जगत से कोई ठोस आधार प्राप्त नहीं हुआ इसके साथ ही साहित्यकार अपनी कृतियों के साथ कोई भी समझौता स्वीकार नहीं करना चाहते थे क्योंकि निर्देशक द्वारा फिल्म बनाते समय रचनाओं में परिस्थितियों के अनुसार दर्शकों की रुचि के को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन सम्भव है।। अनुपम ओझा के अनुसार 'तीसरी कसम पहली फिल्म थी जिसका कथानक जिसके चरित्रऔर भाषा स्वरूप हिंदी क्षेत्र की नजदीकी बोलियां थी।' इस फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला पर व्यावसायिक दृष्टि से यह असफल रही साथ ही फिल्म निर्माता गीतकार शैलेंद्र की मृत्यु का कारण भी बनी। एक साहित्यिक कृति के फिल्माकंन का यह परिणाम चौंकाने वाला था और इसी के बाद समानांतर फिल्मों का चलन प्रारंभ हुआ जिसमें कम बजट पर कलात्मक फिल्मों का दौरा प्रारंभ हुआ और नए निर्देशकों ने हिंदी साहित्य कृतियों पर फिल्म बनाना शुरू किया।1970के बाद जितने भी साहित्यकार हुए उनमें से कुछ को सफलता मिली जिसमें राही मासूम राजा राजेंद्र यादव कमलेश्वर प्रमुख है सबसे ज्यादा प्रसिद्ध कमलेश्वर को प्राप्त हुई इन्होंने साहित्य और सिनेमा में समानांतर सामाजिक स्थापित किया। उनके अनुसार यमैंने कभी वहां अपने को मिसफिट नहीं पाया मेरे पास वही जुबां थी जिसकी वहां जरूरत होती है होती है दूरदर्शन के प्रारंभिक काल में कई सीरियल हिंदी साहित्य की कहानियों पर बने मन्नू भंडारी प्रेमचंद कमलेश्वर मनोहर श्याम जोशी रांगेय राघव। हिंदी साहित्य की कहानियों का छोटे पर्दे पर फिल्मांकन से उस दौर के युवा, हिंदी साहित्यकारों एवं उनके साहित्य से परिचित तो हुए ही साथ ही एक चिंतनशील नैतिक मूल्य, जीवन मूल्य को समझने वाला युवा वर्ग समाज को प्राप्त हुआ।

वर्तमान डिजिटलयुग मेंओ टी की, यू ट्यूब जिसमें साहित्यगत, भाषागत वैचारिक मूल्य का हनन दिखाई देता है उस सब से समाज पर गहरा असर पड़ रहा है इसी कारण समकालीन हिंदी साहित्यकारों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है क्योंकि साहित्य समाज और सिनेमा एक दूसरे से बंधे हुए हैं साहित्यकार और निर्देशक दोनों की जिम्मेदारी है कि सिर्फ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर समाज कोभटकाव नहीं दे सकते इसलिए उन्हें अपने कर्तव्य का बोध होना आवश्यक है। पूंजीवादी सभ्यता, लालच, आधुनिकता का अश्लील चोला तथाकथित सभ्यता बनकर अपना साम्राज्य बनाने की कोशिश कर रहा है एक साहित्यकार के आत्म मीमांसा आवश्यक हो गई है।वर्तमान में भागती दौड़ती दुनिया को ठहराव साहित्य और सिनेमा ही दे रहा है ।एक अच्छी कथा वस्तु के लिए फिल्म कार साहित्य और इतिहास की तरफ देखता है। समकालीन हिंदी साहित्य के लिए सुखद बात है कि युवा लेखक अपन साहित्य उद्देश्य को भूला नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. साहित्य ,कला और सिनेमा –जवरी लाल पार्क
2. साहित्य और सिनेमा बदलते परिदृश्य –डॉ. शैलजा भारद्धाज

****